www.samikshainstitute.com

THE MARKS OF TRUST

समीक्षा इंस्टीट्यूट

A Center of Excellence for Knowledge, Skills & Aptitude

QTS - MPPSC MAINS 2019

Test ID : 08 **Date :** 04-09-2020

TOTAL MARKS-150 | **SUBJECT** म.प्र. भूगोल + आपदा एवं जल प्रबंधन | **TIME 01:30 Hrs.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश (DIRECTION FOR CANDIDATES)

- **Be accountable to yourself.**
- **आप की ईमानदारी आपके हाथ में है।**
- Please mention Your Name, Date, and Test ID.
- कृपया अपना नाम, दिनांक, और टेस्ट आई–डी का उल्लेख करें।
- Convert Images Into PDF File then Upload the File.
- इमेज को पीडीएफ फाइल में बदलें फिर फाइल अपलोड करें।
- All three questions are compulsory, Try to write in the given word limit and given time.
- तीनों प्रश्न अनिवार्य हैं, दिए गए शब्द सीमा और दिए गए समय में लिखने का प्रयास करें।

Student Name

Candidate's Mobile No.

Student Name

Invigilator Signature

JOIN US

98262-28312, 90745-85746, 77708-38222

Follow us on : | Subscribe YouTube Channel

Direction –

1. प्रश्न क्रमांक 01 में कुल 15 अत्यन्त लघु उत्तर स्वरूप के प्रश्न दिये गये है। प्रत्येक उत्तर एक या दो पंक्तियों में देना होगा। सभी प्रश्न A से O तक अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 03 अंक का है।

15*3= 45

(A) विंध्याचल पर्वत श्रृंखला किन पर्वतों का समूह

Vindhyanchal mountains range is a group of which mountains?

उत्तर– विंध्याचल पर्वत श्रृंखला के पश्चिमी भाग में काकरीबर्डी की पहाडियाँ तथा जानापाव की पहाडियाँ वहीं इसके पूर्वी भाग में भांडेर तथा कैमूर की पहाड़ियां अवस्थित है।

(B) संजीवनी केन्द्र।

Sanjivni center.

उत्तर–

1. मध्यप्रदेश में औषिधीय पौधों के प्रसंस्करण केन्द्रों द्वारा प्रारम्भ।
2. इन विक्रय केन्द्रों के माध्यम से प्रसंस्कृत लघुवनोपजों तथा औषिधीय उत्पादों का विक्रय किया जाता है।
3. मध्यप्रदेश में वर्तमान में कुल 28 संजीवनी विक्रय केन्द्र है।

(C) मालवा के पठार की अवस्थिति।

Location of Malwa Plateau.

उत्तर– मध्यप्रदेश का सबसे बडा पठार मालवा का पठार $21^0 17'$ से $25^0 8'$ उत्तरी अक्षांश तथा $73^0 17'$ से $79^0 4'$ पूर्वी देशांतर के मध्य अवस्थित है।

(D) चंबल नदी पर स्थित बाँधों के नाम बतायें।

Which dams are located on Chambal River?

उत्तर–

1. गाँधी सागर बाँध- मंदसौर (115 मेगावाट) ।
2. राणाप्रताप सागर बाँध- चित्तौड़गढ़ (172 मेगावाट)।
3. जवाहर सागर बाँध- कोटा (99 मेगावाट)।

(E) चिल्पी क्रम की चट्टानें ।

Rocks of chilpi group

1. धारवाड़ क्रम की चट्टानों का उपक्रम।
2. मध्यप्रदेश के बालाघाट, जबलपुर तथा छिंदवाडा जिलों में विस्तार।
3. फाइलाइट, क्वार्ट्जाइट, ग्रीन स्टोन तथा मैग्नीज आदि के निक्षेप पाये जाते है।

(F) ग्राम वन समिति।

Village forest committee

उत्तर- बिगड़े वन क्षेत्रों में वनखण्ड सीमा से पांच किलोमीटर दूर तक विस्तृत ग्रामों में आने वाली समितियों को ग्राम वन समिति कहते है। ये ऐसे वन क्षेत्र है जो जैविक दबाव के कारण विरल हो गये है।

(G) कमांड क्षेत्र विकास कार्यक्रम।

Command region development program.

उत्तर- मध्यप्रदेश में बेहतर भूमि, जलप्रबंधन तथा वृहद एवं मध्यम सिंचाई परियोजनाओं के अधीन सिंचित क्षेत्रों में अधिकतम सिंचाई क्षमता का विकास करने के उद्देश्य से 9 सितम्बर 1974 को यह कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। वर्तमान में आठ कमांड क्षेत्र विकास एवं जल प्रबंधन क्षेत्र सक्रिय है।

(H) अवनालिका अपरदन।

gully erosion .

उत्तर- वर्षा जल के तेज बहाव से सतही मृदा का अपरदन तथा धाराओं के रूप में बह जाना एवं उत्खात भूमि की संरचना का निर्माण करना, अवनालिका अपरदन कहलाता है। चंबल नदी घाटी में अवनालिका अपरदन के कारण खोह-खड्डों तथा उत्खात भूमि का निर्माण हो गया है।

(I) चरण पादुका योजना।

charan paduka yojana.

उत्तर-

1. तेंदूपत्ता संग्राहकों के चहुंमुखी विकास हेतु 19 अप्रैल 2018 से प्रारम्भ।
2. इस योजना की शुरूआत सिंगरौली जिले से की गई।
3. इस योजना के अन्तर्गत तेंदूपत्ता संग्राहकों को जूते एवं चप्पल उपलब्ध करवाये जाते है।

(J) नर्मदा-सोन घाटी का विस्तार मध्यप्रदेश के किन जिलों में है?

which districts of Madhya Pradesh Narmada sone valley are expanded?

उत्तर- नर्मदा-सोन घाटी मध्यप्रदेश का सबसे निचला भू-भाग है। यह मालवा के पठार के बाद मध्यप्रदेश का दूसरा सबसे बडा भौगोलिक प्रदेश है। इसके अन्तर्गत मण्डला, अनूपपुर, डिंडोरी, जबलपुर, नरसिंहपुर, रायसेन, होशंगाबाद, हरदा, खण्डवा, खरगोन, बडवानी एवं अलीराजपुर जिले आते है।

(K) मध्यप्रदेश की ऊर्जा राजधानी किस पठार में स्थित है?

in which plaltue power capital of Madhya Pradesh is located?

उत्तर- चूँकि बघेलखण्ड पठार में गोंडवाना क्रम की चट्टानों के कारण कोयले की प्रचुरता देखने को मिलती है, अतः मध्यप्रदेश की ऊर्जा राजधानी बघेलखण्ड पठार में अवस्थित, सिंगरौली जिले के बैढ़न को कहा जाता है।

(L) प्राकृतिक आपदाओं से क्या तात्पर्य है?

what is natural disaster?

उत्तर- मानव पर दुष्प्रभाव डालने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों को प्राकृतिक आपदायें कहते है। जैसे- भूकंप, बाढ़, सूखा, सुनामी, चक्रवात, भूस्खलन आदि। इनके कारण बडे स्तर पर जान-माल की हानि होती है।

(M) सामाजिक वानिकी योजना।

social forestry scheme.

उत्तर-

1. राष्ट्रीय कृषि आयोग की अनुशंसा पर वर्ष 1976 में प्रारम्भ की गई।
2. विभिन्न सरकारी सुविधायें प्रदान करके सामुदायिक भूमि पर समुदाय द्वारा वृक्षारोपण करने की योजना।
3. राष्ट्रीय वन नीति, 1952 के अनुसार भू-भाग के 33 प्रतिशत भाग पर वृक्षाच्छादन करने हेतु।

(N) आपदा प्रबंधन किसे कहते है?

what is disaster management.

उत्तर- आपदा प्रबंधन में आपदा के निवारण संबंधी उपाय किये जाते है। इसके अन्तर्गत आपदा प्रभाव का सामना करने के लिये राहत कार्यो की व्यवस्था तथा आपदा ग्रस्त क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक पक्ष सम्मिलित किये जाते है।

(O) बाढ़ किसे कहते है?

what is flood?

उत्तर- जब नदी का जल अपनी क्षमता से अधिक हो जाता है तो वह नदी के किनारों से बाहर आकर फैल जाता है तथा आस-पास के क्षेत्र जलमग्न हो जाते है, इसे बाढ़ कहते है।

2. प्रश्न क्रमांक 2 में कुल 12 लघु उत्तर स्वरूप के प्रश्न दिये गये है। प्रत्येक उत्तर लगभग 100 शब्दों में देना है। कुल 10 प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न 6 अंको का है। 10*6 = 60

(A) मध्यप्रदेश वन नीति, 2005 के प्रमुख प्रावधान लिखिए।

Explain the major factors of Madhya Pradesh forest policy, 2005

उत्तर- मध्यप्रदेश की प्रथम वन नीति वर्ष 1952 में लागू की गई थी। तत्पश्चात् 4 अप्रैल 2005 को नई वन नीति घोषित की गई, जिसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. वनाश्रित परिवारों हेतु वन आधारित वैकल्पिक रोजगार की सतत् उपलब्धता के अवसर सृजित करना।
2. सीमाओं के समस्त लंबित विवादों का निराकरण करते हुये वन क्षेत्रों का व्यवस्थापन करना तथा वन खण्डों का सीमांकन पूर्ण करना।
3. वर्तमान में व्यवस्थापित अतिक्रमित क्षेत्रों को शीघ्रातिशीघ्र सीमांकित करना तथा भविष्य में अतिक्रमण को रोकने के प्रभावी उपाय करना।
4. वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित करने की कार्यवाही पूर्ण करना।
5. वन सुरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिये संचार सुविधाओं का विस्तार करना।
6. संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष सुरक्षा बलों की व्यवस्था सुदृढ़ करना।

(B) केन-बेतवा लिंक परियोजना।

kane – Betwa link project.

उत्तर- इसका शुभारम्भ 25 अगस्त, 2005 को प्रायद्वीपीय नदी विकास योजना के अन्तर्गत किया गया है। अमृत क्रांति के नाम से शुरू की गई यह परियोजना देश की प्रमुख नदियों को जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश की इस संयुक्त परियोजना के अन्तर्गत केन एवं बेतवा नदियों को जोड़ा जाएगा जिससे दोनों राज्यों के जल की आपूर्ति वाले कई क्षेत्रों को पेयजल एवं सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

इस परियोजना से 8.81 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा तथा 72 मेगावाट जलविद्युत का उत्पादन होगा। वर्ष 2017 में केन-बेतवा परियोजना के अन्तर्गत 73 मीटर ऊँचा दौधन बाँध और 231 किलो मीटर लम्बी नहर निर्मित की गई है, जिसे बेतवा नदी पर निर्मित बरूआ सागर जलाशय से जोड़ा गया है।

(C) मध्यप्रदेश के फसल परिक्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

Explain agro fields of MP

उत्तर- कृषि विभाग द्वारा मध्यप्रदेश को पांच कृषि प्रदेशों में विभाजित किया गया है-

1. पश्चिम में ज्वार-कपास का क्षेत्र- इस क्षेत्र के अन्तर्गत मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, बडवानी, उज्जैन, राजगढ, नीमच, शाजापुर, इंदौर, खण्डवा तथा खरगोन आदि जिले आते है।
2. उत्तर में ज्वार-गेहूँ का क्षेत्र- इसके अन्तर्गत मुरैना, भिण्ड़, श्योपुर, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, छतरपुर तथा टीकमगढ़ आदि जिले आते है।
3. मध्यम में गेहूँ का क्षेत्र- इसके अन्तर्गत भोपाल, सीहोर,रायसेन, होशंगाबाद, नरसिंहपुर,विदिशा, सागर तथा दमोह आदि जिले आते है।
4. चावल-गेहूँ का प्रदेश- यह उत्तर में रीवा, पन्ना, सतना, कटनी, उमरिया, जबलपुर तथा दक्षिण में सिवनी तक पेटी के रूप में है।
5. संपूर्ण पूर्वी मध्यप्रदेश का चावल का क्षेत्र- इसके अन्तर्गत रीवा, सीधी, शहडोल, डिंडोरी, मण्डला और बालाघाट आदि जिले आते है।

(D) विंध्याचल पर्वत श्रृंखला ।

vindhyanchal mountains range

उत्तर- यह मध्यप्रदेश का सर्वाधिक प्राचीन पर्वत है। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 450-600 मीटर तक है। यह नर्मदा नदी के समानान्तर पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है। इसके पश्चिमी भाग में काकरीबर्डी की पहाड़ी मे क्षिप्रा नदी तथा जानापाव की पहाड़ी से चंबल नदी का उदगम होता है। विंध्याचल के पूर्वी भाग में भांडेर तथा कैमूर की पहाड़ियाँ स्थित है। उत्तर-पूर्वी मध्यप्रदेश में विंध्याचल को भांडेर पहाड़ी कहा जाता है यह भाग नर्मदा, सोन तथा केन नदियों का उदगम स्थल है। विंध्याचल के मध्य भाग में विदिशा में उदयगिरि की पहाड़ियाँ तथा भोपाल के पास भीमबेटका की पहाड़ियाँ है। विंध्याचल पर्वत श्रृंखला का निर्माण सिलिका, क्वार्ट्ज तथा लाल बलुआ पत्थर से हुआ है।

(E) वर्षा की मात्रा के आधार पर मध्यप्रदेश का विभाजन कीजिए।

divide Madhya Pradesh on the basis of rainfall

उत्तर- वर्षा की मात्रा के आधार पर मध्यप्रदेश को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

1. दक्षिणी एवं दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र के अधिक वर्षा वाला क्षेत्र- इस क्षेत्र में प्रदेश के अन्य भागों की तुलना में अधिक वर्षा होती है। इस क्षेत्र में मण्डला, बालाघाट, छिंदवाड़ा एवं डिंडौरी आदि जिले आते है। यहां औसत वार्षिक वर्षा 125-150 सेमी. होती है।
2. उत्तर व उत्तर-पूर्वी मध्यप्रदेश का औसत वर्षा वाला क्षेत्र- इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 75-125 सेमी. होती है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत गुना, विदिशा, भोपाल, रायसेन, पन्ना, सतना, रीवा व सीधी आदि जिले आते है।
3. पश्चिमी व उत्तर-पश्चिमी मध्यप्रदेश में कम वर्षा वाला क्षेत्र- इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 75 सेमी. से कम होती है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत मुरैना, भिण्ड़, ग्वालियर, राजगढ़, मंदसौर, नीमच, खण्डवा, खरगोन व धार आदि जिले आते है।

(F) मध्य भारत के पठार का वर्णन कीजिए।

Explain Madhya Bharat plaltue.

उत्तर- इसे चंबल उप-आर्द्र क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। यह पठार मध्यप्रदेश के उत्तर तथा उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है। यह पठार दक्षिण में मालवा का पठार, उत्तर में यमुना का मैदान, पश्चिम में राजस्थान की उच्च भूमि तथा पूर्व में बुंदेलखण्ड का पठार से घिरा हुआ है।

यह प्रदेश भिण्ड़, मुरैना, श्योपुर, ग्वालियर, गुना, नीमच व मंदसौर जिले की भानपुरा तहसील आदि जिलों में मध्यप्रदेश के कुल 10.7 प्रतिशत भाग में विस्तृत है। इसकी सामान्य ऊँचाई 300-500 मीटर तक है। यहां चंबल, सिंध, पार्वती, क्वारी व कूनो आदि नदियाँ प्रभावित होती है। इस पठार का निर्माण भू-वैज्ञानिक दृष्टि से कुड़प्पा, विंध्यन तथा दक्कन ट्रेप के शैलों तथा जलोढ़ मृदा के निक्षेपण से हुआ है। जलवायु की दृष्टि से यह क्षेत्र गर्मियों में अधिक गर्म तथा सर्दियों में अधिक ठंडा प्रदेश हैं। इसकी औसत वार्षिक वर्षा 55-75 सेमी. तक है। इस पठार में चीनी मिट्टी, चूना पत्थर, इमारती पत्थर, संगमरमर आदि प्रमुख खनिज पाये जाते है। ज्वार, गेहूँ, सरसों, अलसी, दालें, तिल, आदि इस क्षेत्र की प्रमुख फसलें है। औद्योगिक दृष्टि से मुरैना व मालनपुर प्रमुख केन्द्र है।

(G) नर्मदा घाटी परियोजना।

Narmada valley project.

उत्तर- इसका उद्घाटन 23 अक्टूबर 1984 को श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा किया गया। नर्मदा नदी पर क्रियान्वित नर्मदा घाटी भारत की पांचवी सबसे बडी नदी घाटी परियोजना है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य सिंचाई एवं विद्युत उत्पादन करना है। यह मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एवं राजस्थान की संयुक्त परियोजना है।

इसके अन्तर्गत मध्यप्रदेश में खण्डवा के पुरासा में इंदिरा सागर परियोजना तथा गुजरात के भड़ौच के निकट सरदार सरोवर परियोजना स्थित है। इस परियोजना के अन्तर्गत 29 वृहद, 135 मध्यम एवं 3000 लघु सिंचाई परियोजनायें प्रस्तावित है। इन परियोजनाओं से 27.55 लाख हेक्टेयर में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

01 अगस्त 2000 को नर्मदा हाइड्रोइलेक्ट्रिक डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन की स्थापना कर इस परियोजना से जल विद्युत उत्पादन करने के लिये प्रभावी योजनाएँ क्रियान्वित की जा रही है।

(H) प्रशासनिक आधार पर वनों का वर्गीकरण कीजिए।

Divide forest on the basis of administration.

उत्तर- प्रशासनिक आधार पर वनों का वर्गीकरण निम्नानुसार है-

1. आरक्षित वन- ये वन राज्य सरकार के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में रहते है। इन वनों में लकड़ियों के एकत्रण तथा मवेशियों को चराने के लिये लोगों का प्रवेश वर्जित है। यह राज्य के कुल वन क्षेत्र के 65.36 प्रतिशत भाग में विस्तृत हैं। मध्यप्रदेश में सर्वाधिक आरक्षित वन खण्डवा वन वृत्त तथा न्यूनतम आरक्षित वन छतरपुर वन वृत्त में है।
2. संरक्षित वन- ये वन राज्य के पूर्ण नियंत्रण में रहते है, परंतु स्थानीय लोगों को लकड़ी एकत्रित करने तथा मवेशियों को चराने की अनुमति होती है। यह राज्य के कुल वन क्षेत्र के 32.84 प्रतिशत भाग में विस्तृत है।

3. अवर्गीकृत वन- इनमें वनों को काटने तथा मवेशियों को चराने पर कोई प्रतिबंध नही होता है। यह राज्य के कुल क्षेत्र के 1.8 भाग में विस्तृत है।

(I) जलवायु के आधार पर मध्यप्रदेश का विभाजन कीजिए।

Divide Madhya Pradesh on the basis of climate.

उत्तर- जलवायु के आधार पर मध्यप्रदेश को चार भागों में विभाजित किया गया है-

1. उत्तर का मैदान- इस क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक गर्मी एवं शीत ऋतु में अत्यधिक ठंड रहती है। यहां औसत वार्षिक वर्षा लगभग 75 सेमी. होती है।
2. मालवा का पठार- यह समशीतोष्ण जलवायु वाला क्षेत्र है। यहां न तो ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी और न ही शीत ऋतु में अधिक ठंड रहती है। यहां औसत वार्षिक वर्षा 50-75 सेमी. होती है।
3. विंध्य पर्वतीय क्षेत्र- इस क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी वहीं शीत ऋतु में अधिक ठंड रहती है। यहां औसत वार्षिक वर्षा 50-100 सेमी. होती है।
4. नर्मदा-सोन घाटी एवं दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र- कर्क रेखा से समीपता के कारण ग्रीष्म ऋतु अधिक गर्म किन्तु शीत ऋतु साधारण ठंडी रहती हैं यहां औसत वार्षिक वर्षा 125-150 सेमी. होती है ।

(J) मृदा अपरदन क्या है? मध्यप्रदेश में मृदा अपरदन के क्षेत्रों को स्पष्ट कीजिए।

what is soil erosion? explain regions of soil erosion in Madhya Pradesh.

उत्तर- बाह्य कारकों (पवन जल व गुरूत्वीय विस्थापन) द्वारा मृदा के महीन कणों का अपनी जगह से बह जाना, मृदा अपरदन कहलाता है। मृदा अपरदन को "रेंगती हुई मृत्यु" भी कहते है।

मध्यप्रदेश में मृदा अपरदन के क्षेत्र- चूँकि मध्यप्रदेश में अधिकांश भूमि पठारी और पहाड़ी है और पर्याप्त ढ़लवां है। इसका विकराल रूप चंबल घाटी में देखने को मिलता क्योंकि यहां पर अर्द्धशुष्क जलवायु के कारण वनस्पति की न्यूनता है अतः चंबल एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे एक चौडी पेटी अत्यधिक गहरे खड्डों में परिवर्तित हो गयी है।

लगभग 6 लाख एकड़ बहुमूल्य कृषि योग्य भूमि इन खड्डों में परिवर्तित हो गई है। इस प्रकार का मृदा अपरदन कुछ नर्मदा नदी के किनारों पर भी हो रहा है।

मृदा अपरदन मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग की एक गंभीर समस्या है जिसने स्थानीय लोगों के आर्थिक व सामाजिक जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया।

(K) **उत्तर भारत बाढ़ से अधिक प्रभावित क्यों है?**

why North India is so effected by flood?

उत्तर- अधिकांश बाढ़ें भारत के उत्तरी मैदान में आती है, क्योंकि उत्तर भारत में अक्सर अधिक वर्षा के कारण नदियों में अधिक जल भर जाता है और बाढ़ आती है।

पंजाब-हरियाणा के मैदान में नदियों की घाटियाँ चौड़ी और कम गहरी है तथा कई स्थानों पर अवसादों के निक्षेप के कारण नदियों का जल दूर-दूर तक फैल जाता है। पूर्वी उत्तरप्रदेश और बिहार में गंगा और उसकी सहायक नदियों- घाघरा, गंडक, कोसी, सोन आदि में वर्षा ऋतु में बड़ी मात्रा में जल भर जाता है और बाढ़ आ जाती है ये नदियाँ पर्वतीय प्रदेशों से जल लाती है और जब ये मैदानी भागों में प्रवेश करती है तो ढ़ाल की कमी के कारण जल की गति एकदम कम हो जाती है। इससे यह जल आगे नहीं बढ़ पाता और वहीं पर फैलकर बाढ़ पैदा कर देता है।

(L) **सूखे से पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या कीजिए।**

Explain the impacts of drought.

उत्तर- सूखे से पड़ने वाले प्रभाव निम्नांकित है-

1. सूखे से जल के अभाव के कारण फसलें नष्ट हो जाती है तथा अन्न की कमी होने से अकाल पड जाता है।
2. पशुओं के लिये चारा कम हो जाता है और तृण अकाल पड़ जाता है जिससे पशुओं की मृत्यु होने लगती है।

3. जल और अन्न की कमी से बडी संख्या में स्त्री, पुरूष और बच्चे भोजन के अभाव में मर जाते है।
4. जल की कमी से लोग दूषित जल पीने को बाध्य हो जाते है जिससे पेयजल संबंधी बीमारियाँ जैसे- हैजा, हेपेटाइटिस आदि हो जाती है।
5. सूखे से देश की अर्थ व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र के साथ ही अन्य क्षेत्र भी प्रभावित होते है।

3. **प्रश्न क्रमांक 03 में कुल 5 प्रश्न दिये गये है, प्रत्येक का उत्तर लगभग 300 शब्दों में होना चाहिए कुल 03 प्रश्नों का उत्तर देना होगा।**

15*3 = 45

(A) **मध्यप्रदेश के कृषि जलवायु प्रदेशों का वर्णन कीजिए।**

Explain agro-climatic zones of Madhya Pradesh.

उत्तर- भौगोलिक व जलवायु विविधता के कारण राज्य को किसी एक कृषि जलवायु क्षेत्र के अन्तर्गत रखना संभव नही है। पृथक भौगोलिक दशाऐं भिन्न-भिन्न प्रकृति की फसलों के अनुकूल होती है, इसलिये इन्हें विशिष्ट कृषि जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

मध्यप्रदेश को 11 कृषि जलवायु क्षेत्र में विभाजित किया गया है-

1. **छत्तीसगढ़ का मैदान-**
   फसल क्षेत्र- धान।
   मृदा-लाल एवं पीली।
   वर्षा- 120-160 सेमी.।
   जिले- बालाघाट।
   कृषि उत्पादन- रेशम उद्योग व संकर सब्जी।
2. **छत्तीसगढ़ के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र-**
   फसल क्षेत्र- धान।
   मृदा-लाल एवं पीली।
   वर्षा- 120-160 सेमी.।

जिले- शहडोल, मण्डला।

कृषि उत्पादन- वर्षा आधारित कृषि उद्यानिकी, हल्दी।

3. **कैमूर का पहाड़ तथा सतपुड़ा की पहाड़ी-**

फसल क्षेत्र- गेहूँ-धान।

मृदा-मिश्रित, लाल एवं काली।

वर्षा- 100-140 सेमी.।

जिले- रीवा, सतना, पन्ना, कटनी, जबलपुर, सीधी।

कृषि उत्पादन- आम, अमरूद, कटहल।

4. **मध्य नर्मदा घाटी-**

फसल क्षेत्र- गेहूँ।

मृदा-गहरी काली।

वर्षा- 120-160 सेमी.।

जिले- नरसिंहपुर, होशंगाबाद,सीहोर और रायसेन।

कृषि उत्पादन- गन्ना, अमरूद, तरबूज।

5. **विंध्य का पठार-**

फसल क्षेत्र- गेहूँ।

मृदा-मध्यम से गहरी काली।

वर्षा- 120-140 सेमी.।

जिले- भोपाल, रायसेन,सागर, दमोह, गुना, विदिशा।

कृषि उत्पादन- मसाले, संतरा, अनार, गेहूँ, चना।

6. **मध्य क्षेत्र-**

फसल क्षेत्र- गेहूँ-ज्वार।

मृदा-हल्का जलोढ़।

वर्षा- 80-100 सेमी.।

जिले- ग्वालियर, भिण्ड़, मुरैना, शिवपुरी, गुना।

कृषि उत्पादन- तिलहन, मूँगफली, धनिया।

7. **बुंदेलखण्ड-**

फसल क्षेत्र- गेहूँ-ज्वार।

मृदा- मिश्रित लाल एवं काली।

वर्षा- 80-140 सेमी.।

जिले- छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया।

कृषि उत्पादन- तिल, हल्दी, सिंघाडा।

8. **सतपुड़ा का पठार-**

फसल क्षेत्र- गेहूँ-ज्वार।

मृदा-हल्का काला।

वर्षा- 10-120 सेमी.।

जिले- बैतूल, छिंदवाड़ा।

कृषि उत्पादन- संतरा, कपास, मशरूम।

9. **मालवा का पठार-**

फसल क्षेत्र- धान।

मृदा-लाल एवं पीली।

वर्षा- 80-120 सेमी.।

जिले- मंदसौर, नीमच, रतलाम,उज्जैन, देवास, झाबुआ।

कृषि उत्पादन- संतरा,अंगूर, गेहूँ, अदरक, प्याज।

10. **निमाड़ का मैदान-**

फसल क्षेत्र- कपास-ज्वार।

मृदा-मध्यम काली।

वर्षा- 80-100 सेमी.।

जिले- खण्डवा, खरगोन, हरदा, धार, बुरहानपुर।

कृषि उत्पादन- चीकू, अनार, मिर्च, केला।

11. **झाबुआ की पहाड़ी–**

फसल क्षेत्र– कपास–ज्वार।

मृदा– मध्यम से कम काली।

वर्षा– 80–100 सेमी.।

जिले– झाबुआ, अलीराजपुर, धार।

कृषि उत्पादन– टमाटर, अनार, मक्का ज्वार।

(B) मध्यप्रदेश सरकार द्वारा वनों के विकास के लिये किये जा रहे प्रयासों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

Write about the efforts made by MP government indevelopment of Forest.

उत्तर– मध्यप्रदेश वन क्षेत्र की दृष्टि से देश में अग्रणी राज्य है। यहां पर वन सम्पदा की प्रचुरता है, जिससे सरकार को प्रतिवर्ष करोड़ो रूपये का राजस्व प्राप्त होता है इसलिये मध्यप्रदेश सरकार वनों का शत–प्रतिशत राष्ट्रीयकरण करके उसके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सतत् प्रयासरत् है।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा वन से संबंधित निम्न योजनाऐं संचालित की जा रही है–

i. **सामाजिक वानिकी योजना–** 1976 में शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य राष्ट्रीय वन नीति, 1952 के अनुसार घोषित निर्धारित मापदण्ड के अनुसार 33 प्रतिशत भाग पर वन लगाना है।

ii. **पर्यावरण वानिकी कार्यक्रम–** 1983–84 में प्रारम्भ की गई इस योजना में नगरीय सामुदायिक क्षेत्रों में वृक्षारोपण करके नगरों में हरियाली लाने का कार्य किया जाता है।

iii. **चारागाह विकास योजना–** इस योजना के तहत राज्य के शुष्क जिलों में जलाऊ लकड़ी, वृक्षारोपण एवं चारागाह का विकास किया जाता है।

iv. **पंचवन योजना–** 1976 में प्रारम्भ की योजना का मुख्य उद्देश्य वनोपजों के घटते अनुपात को देखते हुये नागरिकों को दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति को वन्यीकरण को प्रेरित करना है।

v. **बिगड़े वनों का सुधार कार्यक्रम–** इस योजना के तहत अवर्गीकृत वनों का वन्यीकरण किया जाता है और जल संरक्षण एवं वन्यीकरण के कार्य करके वनों को पुनरोत्थान किया जाता है।

vi. **मध्यप्रदेश वन विकास निगम–** 1975 को स्थापित इस संस्था का मुख्य उद्देश्य वनों की उत्पादन क्षमता को त्वरित गति से वृद्धि करना है।

vii. **चरण पादुका योजना–** यह योजना तेंदूपत्ता संग्राहकों के लिये वर्ष 2018 में सिंगरौली जिले से प्रारम्भ की गई थी। इस योजना के अन्तर्गत तेंदूपत्ता संग्रहाकों को जूते एवं चप्पल उपलब्ध करवाये जा रहे है।

viii. **दीन दयाल वनांचल सेवा–** वर्ष 2016 में सुदूर वनांचलों में विभिन्न विभागों के कार्यक्रमों व योजनाओं का लाभ वनवासियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से इसकी शुरूआत की गई।

उपर्युक्त योजनाओं के सफल क्रियान्वन के फलस्वरूप मध्यप्रदेश में वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है। साथ ही मध्यप्रदेश की वन सम्पदा का संरक्षण एवं जैव-विविधता की सुरक्षा संभव हुई है।

(C) मध्यप्रदेश के संदर्भ में हरित क्रांति का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate green revolution in reference of MP

उत्तर- **हरित क्रांति–** हरित क्रांति के जनक डॉ. स्वामीनाथन के प्रयासों से भुखमरी एवं अकाल जैसी विकराल स्थितियों से निपटने हेतु भारत में वर्ष 1966-67 में हरित क्रांति की शुरूआत की गई। कृषि उपज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने हेतु उन्नत किस्म के संकरित बीजों, उर्वरकों, तकनीकी साधनों, सिंचाई की उत्तम व्यवस्था एवं कीटनाशकों का बहुतायत मे प्रयोग किया गया।

चूँकि मध्यप्रदेश एक कृषि प्रधान राज्य है अतः अन्य राज्यों की तरह मध्यप्रदेश में भी वर्ष 1966-67 में हरित क्रांति की शुरूआत की गई।

मध्यप्रदेश में हरित क्रांति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है। यद्यपि यहां मानसूनी निर्भरता के कारण हरित क्रांति पूर्णतः प्रभावी नही है, लेकिन फिर भी कई फसलों के उत्पादन में मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है। दलहन, सोयाबीन, चना के उत्पादन में मध्यप्रदेश न केवल प्रथम स्थान पर है बल्कि देश के कुल सोया उत्पादन का 80 प्रतिशत से अधिक मध्यप्रदेश ही उत्पादित करता है।

मध्यप्रदेश में हरित क्रांति के सभी अवयव समान रूप से वितरित नहीं हुये है। राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग के मंदसौर, रतलाम, नीमच, उज्जैन, शाजापुर तथा गुना आदि जिलों में खाद्यान्न का उत्पादन कई गुना बढ़ा है। उर्वरकों के उपयोग की दृष्टि से उज्जैन, इंदौर, टीकमगढ़ जिले अग्रणी है। ट्रेक्टरों का उपयोग पूर्वी मध्यप्रदेश की अपेक्षा उत्तरी मध्यप्रदेश में अधिक हुआ है। मध्यप्रदेश में हरित क्रांति के परिणाम स्वरूप प्रमुख फसलों का उत्पादन बढ़ा है। वर्ष 2016-17 में गेहूँ उत्पादन 18,410 हजार मीट्रिक टन वहीं वर्ष 2016-17 में धान का उत्पादन 2260 हजार हेक्टेयर हो गया है। वर्ष 2016-17 में सोयाबीन का उत्पादन 7226 हजार मीट्रिक टन हो गया है। वहीं दलहन का कुल उत्पादन 8201 मीट्रिक टन हो गया है।

हरित क्रांति के बाद मध्यप्रदेश अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने में सक्षम हुआ है। निश्चित तौर पर मध्यप्रदेश में हरित क्रांति का प्रभाव सकारात्मक है। राज्य के समस्त नागरिकों की खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति एवं उद्योगों के लिये कच्चा माल आसानी से उपलब्ध हो रहा है।

(D) **महामारी से क्या आशय है? इसके प्रभाव को कम करने के उपायों को उल्लेख करते हुये भारत में आई हुई महामारियों की चर्चा करें।**

What is pandemic ? diccuss methods to overcome these pandemics and also discuss about pandemic which hit India in past years.

उत्तर- जब किसी ज्ञात या अज्ञात रोग का प्रकोप सीमित क्षेत्र में न रहकर बड़े भू-भाग में तेजी से फैलता है। महामारी किसी विशेष देश में न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से लोगों को प्रभावित करती है।

महामारी के प्रभाव को कम करने के लिये निम्नलिखित उपाय किये जा सकते है-

1. लोगों में शिक्षा एवं जागरूकता के अभाव के कारण महामारी से बचाने वाले उपायों की जानकारी नहीं होती। इससे महामारी का प्रसार अपने उच्च स्तर पर हो जाता है अतः आवश्यक है कि लोगों को शिक्षित एवं जागरूक करने के लिये जागरूकता अभियान संचालित किये जाने चाहिए।
2. महामारी से बचाव में संस्थागत उपाय अधिक कारगर सिद्ध होते है अतः आवश्यकता है कि संस्थागत सुधार कार्य, अस्पताल एवं उन्नत लैबों का विकास किया जाना चाहिए।
3. प्रशासनिक उत्तरदायित्व को अधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
4. अनुशासित जीवनशैली को अपनाकर प्रतिरक्षण क्षमता को बढाने का प्रयास करना चाहिए।
5. सरकार द्वारा महामारी से ग्रसित व्यक्तियों की शीघ्रतिशीघ्र चिकित्सा सुविधायें मुहैया कराने का प्रयास करना चाहिए।

भारत में आयी हुई निम्न महामारियाँ है-

1. पक्षी इन्फ्लुएंजा नामक रोग से देश के कुछ भागों में H_5N_1 के संक्रमण के कारण अत्यधिक नुकसान हुआ। इससे मुर्गी पालन उद्योग पर गंभीर संकट आ गया।
2. हैजा, हेपेटाइटिस 'ए' व हेपेटाइटिस 'बी' आदि जल से उत्पन्न होने वाली महामारियां मे भी भारत को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया।
3. प्लेग, भारत में फैली महामारियों में प्रमुख है। जो 19वीं शताब्दी में फैला था।
4. स्पेनिश फ्लू, भारत मे प्रथम विश्व युद्ध के बाद फैला था। यह बीमारी भारत में उन सैनिकों के कारण फैली जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया था।

5. चेचक महामारी, वायरस 'वेरियोला मेजर या वेरियोला माइनर' के कारण फैलता है। भारत में इसके 60 प्रतिशत मामले दर्ज किये गये। भारत द्वारा NSEP कार्यक्रम चलाया जिसके कारण भारत 1977 में चेचक मुक्त हो गया।

हाल ही में कोरोना वायरस नामक रोग संपूर्ण विश्व में बडे स्तर पर फैला इसके कारण आर्थिक व सामाजिक क्षति वहन करनी पड़ रही है।

(E) जल प्रदूषण क्या है? मध्यप्रदेश सरकार द्वार जल संरक्षण के लिये किये गये प्रयासों की विवेचना कीजिए।

what is water pollution ? diccuss efforts to water conservation made by MP government.

उत्तर- जल में किसी बाहरी अवांछीनय तत्वों का प्रवेश जिससे जल की गुणवत्ता का ह्रास होता है, जिससे जीवों, वनस्पतियों व जल पर निर्भर अन्य कारकों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

चूँकि मध्यप्रदेश मानसूनी वर्षा पर निर्भर राज्य है अतः यहां जल संरक्षण की आवश्यकता अधिक हो जाती है।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा जल संरक्षण के लिये निम्नलिखित प्रयास किये जा रहे है-

1. **नदी जोड़ो परियोजना-** इसके अन्तर्गत मध्यप्रदेश सरकार द्वारा केन-बेतवा लिंक परियोजना, नर्मदा-क्षिप्रा लिंक परियोजना व पार्वती-काली सिंध-चंबल नदियों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है इससे जलाधिक्य वाले क्षेत्रों से जल स्थानांतरित करके जल अभाव वाले क्षेत्रों में जल भेजने पर बल दिया जा रहा है।
2. **बलराम ताल योजना-** मध्यप्रदेश किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग द्वारा वर्ष 2007-08 से भूमिगत जल स्तर को समृद्ध करने के उद्देश्य से यह योजना प्रारम्भ की गई।
3. **ड्रिप सिंचाई-** "न्यूनतम जल से अधिकतम सिंचाई" के सिद्धांत को आगे बढ़ाते हुये मध्यप्रदेश सरकार द्वारा ड्रिप सिंचाई को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप के साथ-साथ कृषि उपज में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिल रही है।

4. **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना–** "हर खेत को पानी" आदर्श वाक्य से युक्त इस योजना की शुरूआत 01 जुलाई 2015 को मृदा एवं जल संरक्षण एवं संवर्धन के माध्यम से वर्षा आधारित कृषि क्षेत्र में सुरक्षात्मक सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराकर कृषि भूमि की उत्पादकता में वृद्धि करने के उद्देश्य से की गई थी।
5. **अटल भू–जल योजना–** प्रधानमंत्री जल जीवन मिशन 2019 के अन्तर्गत इस योजना की शुरूआत 25 दिसम्बर 2019 को की गई इसके अन्तर्गत कुआं, बावडियों, तालाबों व नलकूपों आदि के माध्यम से भू–जल स्तर में वृद्धि के प्रयास किये जा रहे है।

चूँकि मध्यप्रदेश मानसूनी जलवायु वाला प्रदेश है अतः यहां जल संरक्षण की महत्ती भूमिका है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा शैक्षिणिक व संवाद कार्यक्रमों को संचालित करके जनजागरूकता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।